श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :

प.पू. सिद्धांत चक्रवर्ती क्षपकराज शिरोमणि

राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :

आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :

मुनि ज्ञानानंद

कृति :
श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :
प.पू. क्षपकराज शिरोमणि सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :
आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :
मुनि ज्ञानानंद

संस्करण : तृतीय 2022

प्रतियाँ : 1000

ISBN : 978-93-94199-17-0

मूल्य : सदुपयोग

प्राप्ति स्थान :
निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति

ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889, 9867557668

मुद्रण व्यवस्था :
निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिति

सम्पादकीय

भक्ति उस सुदृढ़ नौका के समान है जिसका आलंबन लेने वाला भव्य जीव संसार रूपी सागर को पार कर शिवतट पर पहुँचकर अनंतकाल के लिए विश्रान्ति प्राप्त कर लेता है। भक्ति धारा में प्रक्षालन किये बिना कोई भी जीव स्वत्व की प्राप्ति करने में समर्थ नहीं। संसार से शिवद्वार तक के सेतु का नाम है भक्ति, कर्म मल को प्रक्षालित करने वाली अविरल धारा का नाम है भक्ति, भवकूप में पड़े प्राणियों को बाहर निकालने वाली रज्जू का नाम है भक्ति, कर्म रूपी पर्वत को चकनाचूर करने वाले वज्र का नाम है भक्ति, मुक्ति रूपी कन्या के वरण के लिए कर के समान है भक्ति, आत्मा का सही परिचय देने वाली सखी का नाम है भक्ति, आत्मा को परमात्मा में ढालने वाले साँचे का नाम है भक्ति।

आचार्य भगवान श्री पूज्यपाद स्वामी कहते हैं ''पूज्येषु गुणानुरागो भक्तिः'' पूज्य पुरुषों के गुणों में अनुराग करना भक्ति कहलाता है। वहीं कहते हैं ''स्वस्वरूपानुसंधानं भक्तिः'' अपने स्वरूप का अनुसंधान करना खोज करना भक्ति है। भक्ति वह है जहाँ भक्त भगवान के चरणों में सर्वस्व समर्पण कर उन ही जैसे बनने की भावना भाता है। संसार में केवल भक्त और भगवान का संबंध ऐसा है जहा भगवान की पूजा-अर्चना कर वह स्वयं भगवन बन जात है या भक्ति की भाषा में जहा आराध्य, आराधक को स्वयं अपने समान बना लेता है। समीचीन भक्ति तो वह है जहाँ भक्त अपने इष्ट के पदचिह्नों पर चल उन्हीं जैसे बनने की भावना भाता है, कहता है, ''प्रार्थना है आप ही जैसा बनाने के लिए''।

आचार्य श्री कुमुदचंद्र स्वामी श्री पार्श्वनाथ भगवान की भक्ति करते हुए श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र में कहते हैं–

हृद्वर्तिनी त्वयि विभो शिलिाभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य भाग,
मभ्यागते वन-शिखण्डिनी चन्दनस्य॥

जिस प्रकार मयूर की आवाज सुनकर चंदन के वृक्ष से लिपटे सर्प वृक्ष को छोड़कर चले जाते हैं उसी प्रकार प्रभु आपकी भक्ति की आवाज कर्म रूपी भुजंग के बंधन आत्मा से शिथिल करा देती है।

भगवान से साक्षात्कार करने का भक्ति सशक्त माध्यम है। भगवान की अष्ट द्रव्य से पूजन, स्तोत्रालाप, दर्शन, भजन आदि भक्ति की पर्याय हैं। भगवान का पूजन-अर्चना नि:संदेह चित्त को विशुद्ध करने वाला है और चित्त की विशुद्धता मोक्षमार्ग पर तीव्र गति से अग्रसर करने वाली है। सिद्धावस्था को प्राप्त करने से पूर्व भक्त्यालंबन चेतना के धरातल पर जमी कर्मों की किट्ट कालिमा को दूर करने में अत्यंत सहायक है तभी तो उपकारी करुणामूर्ति आचार्यों ने देवपूजन को श्रावकों के आवश्यकों में लिखा। लगभग 2000 वर्ष पूर्व हुए आचार्य भगवन् कुंदकुंद स्वामी ने तो यह भी कह दिया कि जो गृहस्थ देव पूजन नहीं करता, दान नहीं करता वह श्रावक, श्रावक कहलाने का अधिकारी नहीं।

सत्य तो यही है एक आदर्श भक्त भगवान के सामने वही भावना प्रकट करता है जो आचार्य भगवन् श्री पूज्यपाद स्वामी ने समाधि भक्ति में कही–

तव पादौ मम हृदये मम हृदये तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावत् यावन् निर्वाण सम्प्राप्तिः॥

हे भगवन् आपके पद कमल मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके द्वय चरणों में तब तक लीन रहे जब तक कि निर्वाण प्राप्ति न हो।

आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी मरणकंडिका में कहते हैं–

सिद्ध चैत्यश्रुताचार्य सर्व साधु गता परा।
विच्छिनत्ति भवं भक्तिः कुठारीव महीरुहम्॥

सिद्धों की भक्ति तथा जिन प्रतिमा, शास्त्र, आचार्य एवं सर्वसाधु परमेष्ठियों में की गई श्रेष्ठ भक्ति संसार का वैसे ही नाश करती है, जैसे कुल्हाड़ी वृक्ष को नष्ट कर देती है। और भी कहा है–

भक्तिमाराधनेशानां यो कुर्वाणास्तपस्यति।
स वपत्यूषरे शालीननालोच्य समं ध्रूवम्।

जो पुरुष आराधना के स्वामी स्वरूप अरहंत आदि की भक्ति को नहीं करते हुए तपस्या करता है वह ऊसर भूमि में चावल को बोता है।

प्रस्तुत पुस्तक **'श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान'** भव्य जीवों के चित्त को आह्लादित और विशुद्ध करने का मंगलमय साधन है। जैसा नाम से स्पष्ट है इसमें चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ भगवान के गुणों का स्तवन किया गया है। आज यदि जिनालयों में सर्वाधिक मूलनायकों की गणना की जाये तो संभव है प्रथम स्थान श्री पार्श्वनाथ भगवान् का ही हो। घोर उपसर्ग पर विजय प्राप्त कर जो मुक्ति रमा का वरण किया है संभव है इसीलिए सर्वाधिक लोगों की आस्था का केन्द्र हों।

कलिकुंड का अर्थ सर्व क्लेश, कलह समूह का नाश करने वाले। सबसे अधिक विशेषणों का प्रयोग भी इन्हीं आराध्य के नाम के साथ किया जाता है श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ, श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ, श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, श्री संकटमोचन पार्श्वनाथ इत्यादि। पाप कर्मों के प्रक्षालन और पुण्य कर्मों के उपार्जन के लिए पूजन-विधान भव्य जीवों को सर्वश्रेष्ठ उपहार है। परम् पूज्य गुरुदेव की विशेष अनुकंपा जो चित्त विशुद्धि का यह साधन हमें प्रदान किया। भव्य जीव प्रतिदिन सप्ताह में एक बार या माह में एक बार अथवा शक्त्यानुसार पूजन विधान कर जीवन की समीचीन दिशा व दशा प्राप्त करें।

इस पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करने में संघस्थ त्यागीव्रतियों को तथा प्रकाशन व मुद्रण में सहयोगी सभी धर्मस्नेही श्रद्धालुओं को पूज्य गुरुवर का धर्मवृद्धि शुभाशीष। पूज्य गुरुदेव का संयम पथ सदैव आलोकित रहें तथा मोक्ष पद की प्राप्ति तक मेरे नयनों के पथगामी बनकर रहें। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ परम पूजय अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के चरणों मं सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित अनंत बार नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

मुनि ज्ञानानंद

15 अगस्त, 2019

नोयडा, सैक्टर 50 (उ.प्र.)

अनुक्रमणिका

1. मंगलाष्टक 7
2. विधान की प्रारंभिक क्रियायें 9
3. अभिषेक पाठ (संस्कृत) 14
4. अभिषेक पाठ (हिंदी) 19
5. श्री शांतिधारा 23
6. विनयपाठ 28
7. पूजन पीठिका 30
8. नवदेवता पूजन (आ० श्री वसुनंदी जी मुनि कृत) 35
9. प्राकृत सिद्धभक्ति (आ० श्री वसुनंदी जी मुनि कृत)..... 39
10. श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान 41
11. समुच्चय महार्घ्य 74
12. शांतिपाठ (भाषा) 76
13. विसर्जन पाठ 77
14. श्री पार्श्वनाथ जी चालीसा 78
15. श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती 83
16. निर्वाणकाण्ड 84
17. श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन 87
(वृ. स्वयंभू स्तोत्र/आ०श्री समन्तभद्र स्वामी कृत)
18. श्री पार्श्वनाथ भगवान का जीवन परिचय 91
19. परम्पराचार्य अर्घावली 93
20. प.पू. श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की पूजन...95
21. क्षपक शिरोमणि आचार्य श्री विद्यानंद जी की आरती..... 99
22. मांडना..... 100

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर - प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग - महानिमित्त - कुशलायेऽष्टौ - वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥९॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

(1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ। (इन नौ स्थानों पर तिलक लगायें)।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(सात बार पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि

(दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि - पुण्डरीक - महापुण्डरीक - गंगासिन्धु - रोहिद्रोहितास्या - हरिद्धरिकान्ता - सीता - सीतोदा - नारी - नरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाढ्य - ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे ..... मासे ..... पक्षे .....तिथौ..... वासरे ..... प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं ..... कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

अभिषेक पाठ

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा - स्तव - वन्दना - समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्ग करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(वसन्ततिलका)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥

अथ जिनाभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण - पीठ - कुम्भ,
तालध्वजा - तपनिवारक - भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

(अनुष्टुप)

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत् - स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ - कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

(अनुष्टुप)

शातकुम्भीय-कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द-निर्भर-सुर प्रमदादि-गानैः,
वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।
उद्गीयमान - जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुप)

तीर्थोत्तम - भवैनीरैः क्षीर - वारिभि - रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

(मालिनी)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

(वसन्ततिलका)

पानीय - चन्दन - सदक्षत - पुष्पपुञ्जैः
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पाः,
यूयंजिनाःसततशान्तिकराभवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा मुहूर्निज - करै - रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

(वसन्ततिलका)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

(अनुष्टुप)

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःख-पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,
भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन्! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये।)

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

(ढाल– मंगल की)
(छंद–अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी॥

अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मुणि राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥

तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन-युत वंदत भयो।
तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसों कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करो।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरो॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयो।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित ह्वै, समवशरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी॥

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यही वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भविजीव मस्तक नाय के।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गाय के॥4॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥

जन्म जरामृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरें॥5॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसु-विधि-वश दुख सह्यो॥

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु बांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरो।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करो॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही॥

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूं॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं॥

पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन प्रचंड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो॥

आनंद-कारण दुख-निवारण, परम-मंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं॥
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही॥9॥

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार॥10॥

॥इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ॥

श्री शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः **श्री वीतरागाय नमः**

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्व ग्रहारिष्ट शांति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/शांतिधारा कर्ता का नाम.... सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य - मण्डिताय सिंहासन - सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य- शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन - मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति - प्रसादाद्लक्ष्मी - पुर - राज्य - गेह - पद - भ्रष्टोपद्रव - दारिद्रोद् भवोपद्रव - स्वचक्र - परचक्रोद्भवोपद्रव - प्रचण्ड - पवनानल जलोद्भवोपद्रव - शाकिनी - डाकिनी - भूत-पिशाच- कृतोपद्रव - दुर्भिक्षव्यापार - वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री. .....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्म बलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

(उपजाति छन्द)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

॥इति शांतिधारा॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥

तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥

मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजन-पीठिका

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥
अपराजित - मंत्रोऽयं, सर्व - विघ्न - विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥
अर्हमित्यक्षरं बह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पवैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घवैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पवैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घवैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक - चंदन - तंदुल - पुष्पकैश्चरु - सुदीप - सुधूप - फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः॥
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥४॥
अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव॥
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥५॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।

॥पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

– आ. वसुनंदी मुनि

स्थापना

(छंद–हरिगीतिका)

त्रैलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निाहितो भव भव वषट् सन्निाधिकरणं।

अष्टक (छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालयेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते, ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतू, आये आप समीप हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतू, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु - जिनधर्म-जिनागम - जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः

(नौबार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

(छंद-लक्ष्मीधरा) (तर्ज-भौन बावन्न प्रतिमा....)

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हत् आदि नवदेवता, सदा करे उर वास।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास॥

(शान्तये... शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपामि)

श्री सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

– (आ॰ वसुनंदी मुनि)

देहातीदे सिद्धे, अतीदे रसवण्णफासगंधादु।
पणविहसंसाररहिद - सिद्धे णमंसामि भत्तीइ॥1॥
संसारकारणादो, णाणावरणाइ - अट्ठ - कम्मादो।
विरहियाण सिद्धाणं - णमो णमो सुद्धभावेहिं॥2॥
रायद्देसमोहाइ - भावकम्मादु हीणाण सुद्धाण।
णिम्मलभावजुदाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं॥3॥
अग्गिणा सुतविदसुद्ध - कणयपासाणंव सोयिदा जेहि।
तवेणं णियप्पा ते, सव्व सिद्धा णमंसामि सय॥4॥

सम्मत्तणाणचरित्त - रूव - सिवमग्गं जेहिं गच्छित्ता।
लहिदा सस्सदसिद्धी, णमो ताण सव्व सिद्धाणं।।5।।
चित्ते उप्पज्जमाण - उत्तमखमाइ - भावेहिं णिच्चं।।
जेहिं लहिदा सिद्धी, णमो सया ताण सिद्धाणं।।6।।
धम्मज्झाणेणं पुण, सुक्कज्झाणरूवसमत्थत्थेण।
कम्मसत्तुविजेदू हु, सव्वविसुद्ध - सिद्धा णमामि।।7।।
कोह-माण-जिम्ह-लोह - कसायभावादो हीणा अयला।
अण्णकसायवज्जिदा, पणमामि णिरंजणासिद्धा।।8।।
खओवसमिग-ओदइय-उवसमिग-भावादु रहिदा णिच्चा।
खइयभावसहिदा चिय, सव्वसिद्धा णमंसामि हं।।9।।
सम्मत्त - णाण - दंसण - वीरिय - सुहुमत्तवगाहणत्तेहिं।
अगुरुलहु - अव्वाबाह - गुणजुत्ता पणमामि सिद्धा।।10।।
बावण्णप्पइडिणूण - बेसयप्पइडिविहीणासुद्धाय।
अंतातीदगुणजुदा, णमंसामि णिरुवमा सिद्धा।।11।।
णिक्कम्मा चिय पणविह - संसारहीणा देहविहीणा हु।
गमणागमणविहीणा, जम्ममरणविहीणा वंदे।।12।।

इच्छामि भंते सिद्धभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसा आलोयमि। दव्वभावणोकम्महीणे सम्मत्ताइ-अट्ठमूलगुणजुत्ते अणंतोत्तरपज्जायसहिदे, लोयग्गठिदे सव्वसिद्धे सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

विधान प्रारंभ

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान

॥ स्थापना ॥

(छंद-हरिगीतिका)

(चाल-नवदेवताओं की सदा जो....)

हे पार्श्वनाथ जिनेन्द्र तुमको नमन बारम्बार है।
सन्मार्ग मुझको दे दिया तेरा बहुत उपकार है॥
पूर्ण श्रद्धा भक्ति से तुमको बुलाता हूँ प्रभो।
आकर विराजो मम हृदय में हो निकट मेरे विभो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अष्टक

(छंद-शंभू)

(चाल-हे गुरुवर शाश्वत...)

उज्ज्वल क्षीरोदधि सम जल ले, तेरे चरणों में आया हूँ।
मम भाव विमल हों मन निर्मल हो, यही भावना लाया हूँ।
श्री पार्श्व प्रभु की पूजन से, मन निर्विकल्प हो जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

बावन शीतल चंदन तो बस, तन का आताप मिटाता है।
चिंतामणि प्रभुवर का चिंतन, भव-भव का ताप मिटाता है।।
चंदन तव चरण चढ़ाता हूँ, यह मन शीतल हो जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सब विषय भोग तेरे मन को, आकर्षित कर-कर के हारे।
अक्षय सुसौख्य पद प्राप्त किया, हो गए जगत् से तुम न्यारे।।
अक्षत चरणन जो भेंट धरें, अक्षय पद वो पा जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भोगों में फँसकर हे प्रभुवर, चारों गति में भरमाए हैं।
अब काम वासना को तजने, तेरे चरणों मे आए हैं।।
पुष्पों को अर्पित करने से, यह काम रोग मिट जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

नानाविधि पकवानों ने तो, क्षणभर की भूख मिटाई है।
पर शांत हुआ ना मन इससे, तृष्णा बढ़ती ही पाई है।।
नैवेद्य तुमे अर्पित करता, भव-भव की भूख मिटाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! क्षुधादिरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अज्ञान तिमिर में भटक रहा, तुम तो ठहरे केवलज्ञानी।
सद्मुक्ति मार्ग को दिखला दो, हे पार्श्व प्रभो अन्तर्यामी।।
यह दीप समर्पित करता हूँ, मोहान्धकार नश जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

हे कर्मबली हे मदमर्दक, कर्मों का क्षय कर डाला है।
इन कर्मों से प्रभु बचने का, तेरा ही एक सहारा है।।
शुभ धूप दशांगी खेता जो, वह आठों कर्म जलाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

तुम जिस वसुधा पर संस्थित हो, उस वसुधा को मैं भी चाहूँ।
पा शाश्वत सिद्ध रूप अब मैं, तेरे अन्दर ही बस जाऊँ।।
श्रीफल प्रभु चरण चढ़ाता हूँ, जो चिंतित फल का दाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! महामोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

है नहीं वस्तु अनमोल प्रभु, तुमको जु समर्पित मैं कर दूँ।
अब अर्घ बनूँ स्वयमेव स्वयं को, चरणों में अर्पित कर दूँ।।
करता जो तव पूजन अर्चन, शाश्वत पद को पा जाता है।
पापों का क्षय होता क्षण में, अरु पुण्य हि बढ़ता जाता है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीकलिकुंड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

जय माला

(छंद - शंभू) (तर्ज-हे चंद्रप्रभु...)

हे पार्श्वप्रभो अन्तर्यामी, तब पूजन करने आया हूँ।
तुम जैसा ही प्रभु बनने की, यह शुद्ध भावना लाया हूँ।।

तेरी महिमा का गान प्रभू, शब्दों में कैसे कर सकता।
बतलाओ क्या गूँगा चखकर, फल का आस्वाद बता सकता।।

जब मयूर ध्वनि सुन सर्पों के, बंधन ढीले पड़ जाते हैं।
तेरे क्षण भर के चिंतन से, कर्मन बंधन खुल जाते हैं।।

संकट मोचन तव पूजन से, संकट सारे टल जाते हैं।
कलिकुण्ड पार्श्व की पूजन से, ग्रह क्लेश सभी गल जाते हैं।

त्रैलोक्यपती तव भक्त कभी, भव दुःख कहीं ना पाते हैं।
तेरे दर्शन से पलभर में, जीवन के शूल हट जाते हैं।।

भवभय हर्ता सब सुख कर्ता, सबके दुख को हर लेते हो।
अपने भक्तों को आप प्रभो, अपने समान कर लेते हो।।

हे पार्श्वनाथ तव पूजन ही, भव-भव की पीड़ा हरती है।
हे नाथ तिहारे भक्तों को, फिर मुक्ति रमा आ वरती है।।

बहु पुण्यवंत होते नर वे, तव पूजन का अवसर मिलता।
तव पाद पद्म के गुण गाएँ, कैसा भी संकट सब टलता।।

दस भव के बैरी को भी प्रभु, तूने इस भव से तारा है।
फिर मैं तो चरणों का सेवक, मैंने तुमको चित धारा है।।

मेरी विनती तव चरणों में, तेरे में ही मैं रम जाऊँ।
जब तक ना छूटूँ इस भव से, तुम चरणों में ही बस जाऊँ।।

ॐह्रीं अर्हं श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

प्रथम वलय

अष्टप्रातिहार्यों के अर्घ

(तर्ज-रे मन भज ले...)

तेरी संगत से प्रभु जी, सब जीव नित्य सुख पाएँ।
वह शोक रहित हो वृक्षा, तव ही अशोक बन जाए॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सिंहासन तेरा जिनवर, चित्रित मुक्ता मणियों से।
स्वर्णिम तव तन की आभा, चमके गिरि रवि किरणों से॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासनसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

छत्रत्रय शोभित सिर पर, नित ये दर्शाते प्रभुवर।
तुम तीन भुवन के स्वामी, त्रैलोक्यपति तुम जिनवर॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भामण्डल पीछे सुंदर, हो जीव अचंभित लखकर।
भव सात झलकते इसमें, चलते सु भव्य शिवपथ पर॥

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

शिवपथ को दर्शाते हैं, तव दिव्य वचन हे जिनवर।
अमृतमयी वाणी तेरी, करती सबका दिग्दर्शन॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अर्हंत देव के चहुँदिश, पुष्पों की करें सुर वृष्टि।
होते जगजन आनंदित, प्रमुदित हो नाचती सृष्टि॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

भक्ति सेवा में प्रभू की, यक्षाधिप चँवर ढुराते।
कर्मों का बंधन टूटे, बस यही भावना भाते॥

ॐ ह्रीं अर्हं चामरसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

जिनदेव प्रभू की जय-जय, हो जिन शासन की जय-जय।
बज रही गगन में प्रभु जी, भेरी तव यश की अक्षय॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभिसत्प्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

दोहा

प्रातिहार्य वसु जान ये, नित मंगल सुखदाय।
पार्श्वप्रभो की पूज से, रोग शोक मिट जाय॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टप्रातिहार्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

।।द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

द्वितीय वलय

सोलह कारण भावना के अर्घं

(तर्ज-नवदेवता पूजन)

दर्शन विशुद्धी भावना सब सद्गुणों की खान है।
शुभ तीर्थ पद पाने को प्राणी, यह प्रथम सोपान है।

नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सम्पूर्ण दोषों का विनाशक, धर्म का यह मूल है।
पाऊँ विनय सम्पन्नता भव-उदधि का यह कूल है।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नताभावना तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सु शीलव्रत शिवपथ का वाहन, देय सुख अविराम है।
उन शीलव्रत धर धारी की सुमहिमा, का करें सुरगान है।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारभावना - तीर्थंकर - नामकर्मस्य कारण भूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सब झंझटों को छोड़ श्रुत, आधार जिसने पा लिया।
रत हो निरंतर श्रुत मनन में, चित्त को निर्मल किया।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना - तीर्थंकर - नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

शुभ भावना संवेग भाकर के, निजातम लख लिया।
संसार सुखतन अथिर लखकर, भोग को भी तज दिया।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवेगभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल - संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

इक बीज से फल बहुत हों यूँ, त्याग से बहु सुख कहा।
यह कल्पतरु सम फल प्रदाता, वेद आगम में कहा।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्याग-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

सब जिनवरों सब गणधरों का, श्रेष्ठ गुण तप है कहा।
है मोक्ष का पाथेय तप ही, इस बिना सुख किमि कहा।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

मुनिराज के तप में यदि कभी, विघ्न आता हो कहीं।
तन मन वचन से दूर करना, भावना अष्टम सही।।
नश्वर क्षणिक संसार में अब, है नहीं कुछ चाहना।
अष्टम धरा पर जाने हेतु, पूजुँ सोलह भावना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

सब आधि-व्याधि को हटाकर, साधु सेवा जो करें।
वह बहुपकारी वैयावृत्ति, सर्व दुखसंकट हरें।।
शुभ-भावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्तिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

अरिहंत प्रभु की भक्ति भव से, तारने को यान है।
बनता वही भगवान जिसका, भक्ति ही बस प्राण है।।
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

आचार्य पंचाचार पालें, पंच अघ तजि के सदा।
उनके सभी वे शिष्यगण भी, धर्म ना भूलें कदा।।
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

सब अंग द्वादश पूर्व चौदह, जानते पाठक सुधी।
गुण प्राप्त हों शुभ भक्ति से, पढ़ते-पढ़ाते हैं गुणी॥
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

स्याद्वाद मयी वाणी प्रभु की, भक्ति से चित धारते।
वाणी सुनें उसमें रमें फिर, दुख न कोई पावते॥
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तिभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥13॥

समता सु प्रत्याख्यान वंदन, आदि जो किरिया करें।
पाले षडावश्यक भविक वो, मोक्ष लक्ष्मी को वरें॥
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणिभावना - तीर्थंकर - नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥14॥

विद्या सुपूजा ज्ञान से जिनमार्ग का उद्योत हो।
जिनदेव का शासन हमेशा, जगत् में जयवंत हो॥
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

धर्मातमाओं में सभी वात्सल्य का झरना झरे।
निःस्वार्थ निर्मल प्रेम ऐसा, बच्छ को निज गौ करे।।
शुभभावना सोलह विमल ये, सकल सुख की धाम हैं।
मुक्ति सुवधू को प्राप्त करने, का प्रथम सोपान है।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

पूर्णार्घ्य

भगवान की ऊँकार ध्वनि से, गूँथ गणधर ने कही।
मुनिराज ने लिपिबद्ध करके, बात आगम में कही।।
जननी समा जिनतीर्थपद की, शुभ्र सोलह भावना।
गर चाहते हो मुक्ति को तो, नित्य इनको धारना।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशकारणभावना-तीर्थंकर-नामकर्मस्य कारणभूत च तस्य फल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

।।तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तृतीय वलय

चौंतीस अतिशयों के अर्घ

(10 जन्म के अतिशय)

(छंद - शंभू)

(तर्ज-पार्श्वनाथ पूजन-पुष्पेन्दु कृत/हे गुरुवर शाश्वत...)

पुण्यातिपुण्य पूरित अणुओं से अतिशय सुंदर देह बने।
ऐसा अनुपम सौंदर्य प्रभू, शब्दों में कोई कह न सके॥
तीनों लोकों में ऐसा सुंदर, रूप कहीं ना पाता हूँ।
हे अतिशय सुंदर पार्श्वप्रभो, तुमको मैं शीश झुकाता हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यंतरूपातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ऐसी सुंगध संदेह भरी, जो नभमंडल महकाती है।
फूलों की बगिया की सुरभी, उससे फीकी पड़ जाती है॥
चिंतामणि प्रभु संकटमोचन, तव कहीं पार ना पाता हूँ।
सर्वांग सुगंधित पार्श्वप्रभो, मैं तेरी महिमा गाता हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततन-रूपातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

कोई ऋतु हो कोई मौसम, वपु द्युति में कमी न आती है।
वर्षों बीते बीते युग-युग, सुंदरता बढ़ती जाती है।
साधारण मानव के तन पर, नित दिखता है जु पसेव कहीं।
तेरे अतिशयकारी तन पर, प्रभु! उस पसेव का लेश नहीं॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेदाभावरूपातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

पावन सोलह कारण भावन, भाकर तीर्थंकर प्रकृति गही।
न हो निहार इस तन से कभी, प्रभु ऐसी अतिशय देह लही॥
मल मूत्रादिक की उपज नहीं, प्रभु के निर्मल पावन तन से।
ऐसे पवित्र पारस प्रभु को, मैं वंदन करता हूँ मन से॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं निहाराभावातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

घर को छोड़ा नाता तोड़ा, दीक्षा ले ली अन्तर्यामी।
बहु वर्षों तक तप को करके, पद प्राप्त किया केवलज्ञानी।
तव समवशरण में हे प्रभुवर, खिरि दिव्यध्वनि तव कल्याणी।
तेरी प्रिय हितमित वाणी सुन, तर गए असंख्यातों प्राणी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं हित - मित - प्रिय - वचनरूपातिशय - गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हे पार्श्वप्रभू तुम महाबली, कोई बल वर्णन कर न सका।
जग में उपमा ना इस बल की, इसको कोई ना तौल सका।।
हो कल्पवृक्ष हो कामधेनु, हो शांतिविधाता सुखदाता।
तुम ही अतुल्य बलधारी प्रभु, तुम ही मेरे चित के त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्यबलरूपातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

तीनों लोकों में जो अनंत गुण शरण में तेरी आ गए।
तुम ही में हे पारस प्रभु जी, वे सब गुण आकर समा गए।
तीनों लोकों के जीवों पर, अतिशय वत्सल जिनदेव रहा।
अतएव रुधिर ना लाल नील, उसका सूचक वह श्वेत रहा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिरातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

जो पूर्वभवों में पुण्य किया, उनसे शुभ चिह्न प्रकट होते।
वे पद्म चन्द्र शंखादि रूप से, अखिल देह में ही रहते।।
इक सहस आठ ये शुभ लक्षण, श्री तीर्थंकर में पाते हैं।
श्री धर्म धुरंधर परम गुरू, ऐसा संदेश सुनाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रअष्टोत्तर-शुभलक्षणयुक्त-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

सद्नाम कर्म के फल स्वरूप, संस्थान प्राणियों के होते।
तुम पुण्य से हो भरपूर प्रभु, शुभ समचतुरस्र युक्त होते॥
प्यारी आकृति सुंदर अवयव, ऐसे तन सहित प्रभो रहते।
अरु इस तन को भी छोड़ प्रभू जी, सिद्ध शिला में जा बैठे॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्रसंस्थानरूपाकृति-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

वज्र के वेष्टन वज्र की कीली, और अस्थियाँ वज्र रूप।
शुभ वज्र वृषभ नाराचसंहनन, होता है अतिशय स्वरूप॥
संवर ने पारस प्रभु पर जब, ओले पत्थर जल बरसाए।
उसमें न डिगे और ज्ञान लहा, वह महिमा हम कैसे गायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहनन-रूपातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

(10 केवलज्ञानातिशय के अर्घ)

(छंद - अडिल्ल)

(तर्ज - सोलह कारण भाए....)

नशा घातिया प्रभू विराजे हो जहाँ।
सौ योजन तक हो सुभिक्षता ही वहाँ।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकाशतयोजन-सुभिक्षतारूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

पुण्य कोष हो अधिक भव्यजन का जहाँ।
करें केवली गगन गमन अतिशय महा॥

पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमनरूप - कैवल्यातिशय - गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

इक ओर मुख कर बैठे केवलज्ञानी।
दिखते हैं चहुँ ओर अतिशय कल्याणी।।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दिशमुखमण्डल-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

अदया भावों रहित केवली हों सदा।
जीव कष्ट या घात नहीं होवे कदा।।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभावरूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

मानव हो, तिर्यंच, देवता वर्ग हो।
कर न सके यत्किंचित् भी उपसर्ग वो।।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपसर्गतारूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

क्षुधा भयानक रोग प्रभु उसको दहा।
न हो कवलाहारजिनागम में कहा।।

पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाराभावरूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

तीन लोक में जगह कहीं न पाई है।
विद्याएँ सब शरण आपकी आई हैं।।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्याईश्वरत्वरूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

केवलज्ञानी का अतिशय कहते सभी।
नहीं केश नाखून बढ़ें उनके कभी।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं केशवृद्धिविहीनता-रूपकैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

नहीं नेत्र टिमकार नमन हो भक्ति से।
तुमे निहारूँ पल-पल अनिमिष दृष्टि से।।
पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृष्टिरूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

केवलज्ञानी प्रभु का अतिशय है सही।
परछांई जिनवर तन की पड़ती नहीं।।

पार्श्व प्रभु हमें मुक्त करें भव पीर से।
बनें आप सम धीर वीर गंभीर से।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृगछायारूप-कैवल्यातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

(14 देवकृतातिशय के अर्घ)

(छंद - शंभू)

(तर्ज-पार्श्वनाथ पूजन-पुष्पेन्दु कृत)

है श्री अरिहंत प्रभू जी की, वाणी सु निरक्षरी ऊँकार।
मागध जाति के देव करें, लघु और महाभाषा प्रकार।।
अट्ठारह महाभाषायें अरु लघु सात सौ भाषाएँ होती।
नर हो, पशु हो या सुरपति हो, सबकी हि समझ में आ जाती।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-अर्धमागधीभाषा-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ना द्वेष कलह वैमनस्यता का, दूर-दूर तक नाम नहीं।
इक भाव मित्रता का सब ही में, घृणा का कोई स्थान नहीं।।
सब भवों-भवों का बैर भूल, माहौल मित्रता का छाता।
इक साथ सिंह-गौ को तट पर, पानी पीते देखा जाता।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-सर्वजनमैत्री-भाव-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

समवशरण प्रभुवर का रचा, आनंद के निर्झर फूट पड़े।
सब उज्जवल पावन विमल हुआ, दश दिश कैसे फिर पीछे रहें।।
दिक्पालों ने प्रभु भक्ति में, दश दिश को निर्मल स्वच्छ किया।
देवोपुनीत अतिशय अद्भुत, जनमन को आह्लादित है किया।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-निर्मलदिग्दिशत्व-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

तिर्यंच, देव अरु मनुज सभी, प्रभु की भक्ति में झूम उठे।
चेतन की तो है बात ठीक, लगता पुद्गल भी नाच उठे।।
तब ही तो उन्नत नभ देखो, क्षीरोदधि सम है विमल हुआ।
उसका आह्लादन तो देखो, पावन निर्मल अरु स्वच्छ हुआ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-निर्मलाकाश-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

सृष्टि पूरी आनंदित है, यह महिमा केवलज्ञानी की।
खुश है अंबर खुश है धरती, सब खुश हैं फूल अरु डाली भी।।
सारी ऋतुओं के एक साथ, फल-फूल फलित होते ऐसे।
अतिशय यह जिनवर का प्यारा, प्रभु का गुणगान करूँ कैसे।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-षट्ऋतुफलितपुष्प-फल-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

चहुँ ओर स्वच्छ पावन निर्मल, प्रभु का गुणगान सभी करते।
मानो अरिहंत जिनेश्वर का, सब मिलकर के स्वागत करते।।
अपनी सेवा अपनी श्रद्धा, अपनी सुभक्ति शुभ भाव लिए।
वसुधा होती इक योजन तक, दर्पणवत् उज्जवल कांति लिए।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनित-अतिशय-दर्पणवत्पृथ्वीतल-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

जब केवल ज्ञान हुआ प्रभु को, तब समवशरण रचना कीनी।
तीनों गतियों के जीवों ने, जिनवर प्रभु की भक्ति कीनी।।

भक्ति में प्रभु की होके मगन, कीर्तन गुणगान तभी गाया।
देवों ने जय-जयकारों से, धरती नभ मण्डल गुंजाया।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीत-अतिशय-नभसिजयघोषातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

प्रभु के तन के संस्पर्शन से, वह पवन सुगंधित हो जाती।
मानों प्रभुवर की महिमा का, संदेश सभी को दे आती।
प्रभु के चरणों में आता है, वह भव सागर तिर जाता है।
आश्चर्य नहीं पारस छूकर, लोहा स्वर्णिम हो जाता है।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय-सुगंधितबयार-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड - पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

सम्पूर्ण प्रकृति प्रमुदित होकर, मानो प्रभुवर के गुण गाती।
उनका उल्लास बढ़ाने को, गंधोदक वृष्टि हो जाती।
प्यारी गंधोदक की वृष्टि, सबको शीतल कर देती है।
संतप्त हुए मानव चित को, वह शीघ्र शांत कर देती है।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय - गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

जो पूर्व भवों से अर्जित है, तेरा अतिशयकारी सु पुण्य।
उस पुण्य रूप महिमा भारी, तव जय-जयकार करे सु गुण्य।।
जहँ फूल और काँटे देखो, संग-संग जीवों को मिलते।
यह अतिशय जिनवर के पथ पर, सजते प्रसून कंटक हटते।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय-निष्कंटकभूमि-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

जिनवर के पूजन वंदन को, सब सुरगण मिलकर के आये।
प्रभुवर सुभक्ति के वशीभूत हो, सबने अतिशय रचवाये।
इन अतिशय से संयुक्त हुई, इस अद्‌भुत छटा दिखाती है।
इन सबको देख सकल सुसृष्टि, हर्षित जो मन को भाती है।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय-हर्षितसृष्टि-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

अरिहंत प्रभू जब गमन करें, हो धर्म चक्र सबसे आगे।
उसके सम्मुख कोई दुर्गुण, अरु न अधर्म टिकने पावे।।
प्राणी सब पापों को छोड़े, अवगुण को तत्क्षण दूर करे।
हो निर्विकार निश्छल निर्मल, जिनदेव धर्म को नमन करें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय-अग्रगामिधर्मचक्र-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

हे विश्व विजेता आत्मजयी, तुम सब मंगल के भी मंगल।
तेरे वैभव को दरशाते, ध्वज चमर आदि आठों मंगल।।
पर सब वैभव को छोड़ प्रभू, तुम शुक्ल ध्यान में लीन हुए।
सारे जग से नाता तोड़ा, निज आतम में तल्लीन हुए।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवोपुनीतअतिशय-अष्टमंगलद्रव्य-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड -पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

दोहा

चौंतिस हैं जिनदेव के, शुभ अतिशय अनुरूप।
है अगम्य महिमा प्रभो, गुण गाऊँ शिव भूप।।

ॐ ह्रीं अर्हं चौंतीसातिशय-गुणमण्डिताय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

चतुर्थ वलय

चौंसठ ऋद्धि अर्घ

चौपाई छंद

सकल द्रव्य गुण पर्यायों को, एक समय में ही पहचानें।
केवल बुद्धि ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतालीस लाख योजन तब, बात सभी के मन की जानें।
मनः पर्यय ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे लघु अविभागी पुद्गल, अणु को भी प्रत्यक्ष हैं जानें।
अवधि बुद्धि ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कोष्ठ में भरी वस्तुओं सम, शब्द अर्थ मय आगम जानें।
कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक बीज को चित में धारे, ग्रंथ कई तव ही रच डारे।
बीज बुद्धि ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लोग अनेकों साथ भी बोलें, क्या कहता कोई पहचानें।
श्रोतृ संभिन्न ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्न-संश्रोतृऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक पाद जो शास्त्र का जानें, ग्रंथनि सार तुरत पहचानें।
पादानुसार ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं पादानुसारबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजन से अधिक दूर तक, संस्पर्शन बल जिसमें पाने।
दूरस्पर्श ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्पर्शबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवयोजन से अधिक दूर तक, आस्वादन की शक्ति पाने।
दूरास्वादन ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादनबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य सु ऋषिवर गंध की शक्ति, नवयोजन से दूर की जानें।
दूर गंध ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हानें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरगंधबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डाधिपति से ज्यादा, दूर दृष्टि मुनिवर जो पाने।
दूरावलोक ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हाने॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरावलोकनबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश योजन से भी ज्यादा, शब्द श्रवण बल स्वामी पाने।
दूर श्रवण ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ मम संकट हाने॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरश्रवणबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्वधर विद्या पाएँ, नश्वर वैभव को न चाहें।
जय दश पूर्व ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता चौदह पूर्व के जिनवर, स्वामी तुमको हृदय बसाएँ।
चतुर्दश पूर्व ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भौम अंग स्वर व्यंजन आदिक, लख निमित्त जो सब बतलायें।
अष्टांग निमित्त ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगनिमित्तबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य ऋषीश्वर बिना पढ़े ही, जो सम्पूर्ण भेद समझायें।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारक, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म छोड़ कुछ भी नहीं तेरा, भेद ज्ञान सबको करवायें।
जय प्रत्येक ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येकबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी का करके खंडन, जिन शासन का ध्वज फहराएँ।
जय वादित्व ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं वादित्वबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थलवत् चलकर, सब जीवों के प्राण बचायें।
जल चारण ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलचारणबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन घुटने मोड़े धरती से, चऊ अंगुल जो ऊपर जायें।
जंघाचारण ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं जंघाचारणबुद्धिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तंतु पर चालें, हिले नहीं न टूटने पाये।
तंतु चारण ऋद्धि के धारी, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं तंतुचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों पर भी गमन करें यदि, पुष्प जीव कुछ कष्ट न पायें।
पुष्प ऋद्धि धारी श्री जिनवर, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्रों पर यदि पाँव धरे तब, बाधा कोई जीव न पाएँ।
पत्रन् चारण ऋद्धि धारक, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं पत्रचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें बीजों पर मुनिवर, पीड़ा वे कुछ भी नहीं पाएँ।
बीजन् चारण ऋद्धि धारक, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं बीजचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणीवत् ऋषि गमन करे हैं, बिन प्राणी पीड़ा पहुँचाए।
श्रेणी चारण ऋद्धि धारक, पार्श्वनाथ हम तव गुण गाएँ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेणीचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव अग्नि के कष्ट न पाते, अग्नि शिख मुनि जो पग धारें।
अग्नि चारण मुनि को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारे।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं कष्ट होता जीवों को, मुनिवर जब आकाश में चालें।
नभ चारण मुनिवर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभचारणक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु समान काया कर लेते, जीवों के प्रति करुणा धारें।
अणिमा ऋद्धीश्वर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं अणिमाविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काया अति उन्नत कर लेते, मुनि अगम्य महिमा को धारें।
महिमा ऋद्धीश्वर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमाविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ काय भी हल्की लागे, दु:खियों के प्रभु आप सहारे।
लघिमा ऋद्धीश्वर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं लघिमाविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सूक्ष्म देखन में लागे, हिले नहीं इन्द्रादिक हारें।
गरिमा ऋद्धीश्वर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरिमाविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुधा पर बैठे ही ऋषिवर, चंद्र सूर्य ग्रह छूते सारे।
प्राप्ति ऋद्धीश्वर को बंदूँ, भव सागर से शीघ्र हि तारें।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तिविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काया नेक प्रकार बनाते, धरती में जलवत् लहराते।
प्राकाम्य ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तपधारी निस्पृह निर्मोही, सुर नर मुनि सब शीश झुकाते।
जय ईशत्व ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशत्वविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पलभर में दर्शन करते ही, जीव सभी वश में हो जाते।
जय वशित्व ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं वशित्वविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छिद्र बिना गिरि बहुत विशाला, बिना घात उसमें से जाते।
अप्रतिघात ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप बल से यह प्राप्त ऋद्धि है, मुनि को कोई देख न पाते।
अन्तर्धान ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तर्धानऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप की महिमा बड़ी हि न्यारी, मन वांछित कई रूप बनाते।
काम रूपित्व ऋद्धि के स्वामी, वंदन से दुख पास न आते।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामरूपित्वविक्रियाऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्ड पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल : हे गुरुवर धन्य हो तुम....

इक उपवास करें जो मुनिवर, घटे नहीं बढ़ते जाते।
उग्र तपः ऋषि के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन कमजोर दीप्ति नित बढ़ती, मुनि उपवास करे जाते।
दीप्ति तपः ऋषि के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं निहार हो, ले आहार, मानो सब कुंदन हो जाते।
तप्त तपः ऋषि के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानयुक्त हो त्रस नाली के, जीव सभी जाने जाते।
महातमः ऋषि के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं महातपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा या कोई बाधा, संयम से नहीं डिग पाते।
घोर तपः ऋषि के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन ऋषियों को यदि सताते, भय अकाल आदि पाते।
घोर पराक्रम ऋषि पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरपराक्रमतपोऽतिशयऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचारी मुनि रहते, वहाँ रोग सब मिट जाते।
ऐसे ऋषिवर के पूजन से, धन वैभव सुख सब पाते।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं अघोरब्रह्मचर्यतपोऽतिशयऋद्धि - धारकाय श्रीकलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ सहित मन में विचार कर, इक मुहूर्त में पढ़ जाते।
जानें सब श्रुतज्ञान के अक्षर, मुनिवर के हम गुण गाते।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनोबलऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इक मुहूर्त में द्वादशांग का, पाठ शुद्ध जो कर जाते।
कंठ दुखे न उच्च बोलकर, ऐसे मुनि के गुण गाते।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं वचनबलऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य ऋषीश्वर अति बल धारी, बल का पार नहीं पाते।
हिला सकें तीनों लोकों को, ऐसे मुनि के गुण गाते।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायबलऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नख केशादिक संस्पर्शन से, सर्व रोग ही मिट जाते।
आमर्षोषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षौषधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुख का थूक आदि मल लगते, रोग सभी तब नश जाते।
खेल्लौषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं खेल्लौषधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श स्वेद मुनि का जल होता, दूर सभी व्याधि पाते।
जल्लौषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत मैल हो या हो नासिका, रोग सभी उससे जाते।
मल्लौषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लौषधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मल मूत्रादिक से ऋषिवर के, आधि-व्याधि सब मिट जाते।
विडौषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं विडौषधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के तन से संस्पर्शित, वायु लगते व्याधि भागे।
सर्वौषधि ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौधिऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत वच मुनिवर के सुनकर, प्राणी निर्विष हो जाते।
आस्याविष ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्याविषऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणामयी दृष्टि से प्रभु की, विष निर्विष सब हो जाते।
दृष्टिनिर्विष ऋद्धि के धारक, ऐसे मुनि के गुण गाते।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विषऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छंद

मुनि मुख से हो क्रोध वश, मरण वचन निकसाय।
आशीर्विष रस ऋद्धिधर, ऋषि बसे हिय आय।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं आशीर्विषऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध दृष्टि ज्यों ही पड़े, व्यक्ति झटित मर जाय।
दृष्टिविषं विष ऋद्धिधर, ऋषि बसे हिय आय।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविषऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीररहित आहार में, स्वाद क्षीर का आय।
क्षीर स्रावि रस ऋद्धिधर, नमूँ पार्श्व जिनराय।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्रावरिसऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आहार मीठा रहित, मिष्ट स्वाद तब आय।
मधुस्रावि रस ऋद्धिधर, पूजें शिव सुख दाय॥60॥

ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्राविरसऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से रहित आहार में, स्वाद ही घृत का आय।
घृतस्रावि रस ऋद्धिधर, प्रभु नमूँ चित लाय॥61॥

ॐ ह्रीं अर्हं घृतस्राविरसऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजुलि में यदि विष हुआ, तो अमृत बन जाए।
अमृत स्रावि रस ऋद्धिधर, आतम गुण प्रगटाय॥62॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्राविरसऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके घर आहार हो, उस दिन उस घर माँहि।
चक्रवर्ती की सैन्य भी, भोज करे कम नाँहि॥63॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ रुके जिनवर यति, ऋद्धीधर जिनराय।
चक्रवर्ती की सैन्य भी, उसमें पूर्ण समाय॥64॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणसंवासऋद्धि-धारकाय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(अडिल्ल छंद)

ज्ञानावरणी कर्म नष्ट जो हो गया।
प्रगटा केवल ज्ञान घोर तम खो गया॥
नंत ज्ञान के धारक तव हो गए प्रभो।
हमको भी दो ज्ञान वीतरागी विभो॥65॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञान-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व दृष्टि सम्यक् उपजी सुज्ञान की।
ज्योति जगी अंतस में भेद विज्ञान की।।
दर्शन नंत हुआ उसको मैं वरन करूँ।
सर्वज्ञ अरिहंत प्रभू को नमन करूँ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शन-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर सब संसार उसे छोड़ा विभो।
निराबाध शाश्वत सुख तुम पाया प्रभो।।
नंत सुखारी जिनवर तुम निरवंद्य हो।
सुखी सभी हों जिनशासन जयवंत हो।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत सुख-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंत अतुलबल के जिनवर तुम हो धनी।
ओ जग के सरताज मेरि तुमसे बनी।।
अनुपम बल ऐसा हमको भी दो विभो।
जग में दोबारा ना हम आयें प्रभो।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतबल-संयुक्ताय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कलिकुण्ड पारस प्रभो, ऋद्धि सिद्धि दातार।
महा अर्चना मैं करूँ, करो भवोदधि पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकेवलऋद्धिसिद्ध-चतुःषष्टिऋद्धि तथैव अनंतज्ञानादि अनंतचतुष्टय-प्रदायि श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं अर्हं सकलक्लेशहराय श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः

जयमाला

(तर्ज : जयकेवल भानु कला....)

जय पार्श्वनाथ अंतर्यामी, त्रैलोक्यपति त्रिभुवन स्वामी।
जय पार्श्वनाथ करुणासागर, प्रभु गुण रत्नों के तुम आगर।।
जय पार्श्वनाथ मंगलकारी, निर्मोह केवली अविकारी।
जय पार्श्वनाथ जग हितकारी, आनंदकरन शिव त्रिपुरारी।।
जय पार्श्वनाथ अवगुण नाशक, आतम के तुम अद्भुत शासक।
जय पार्श्वनाथ तुम विश्वविजयी, इंद्रियों के जेता कर्म जयी।।
जय पार्श्वनाथ सुर नर वंदित, भक्ति करती तव आनन्दित।
जय पार्श्वनाथ गुणगण नायक, प्रभु सिद्धशिला के अधिनायक।।
जय पार्श्वनाथ संकटमोचन, दर्शन से धन्य हुए लोचन।
जय पार्श्वनाथ पथ दर्शायक, जन हर्षायक शिवमग दायक।।
जय पार्श्वनाथ तुम अविनाशी, तुम ही हो सिद्धशिला वासी।
जय पार्श्वनाथ अघ संहारक, तुम प्राणिमात्र के हितकारक।।
जय पार्श्वनाथ सबके हो नाथ, तुम जिसके साथ हो न अनाथ।
जय पार्श्वनाथ केवलज्ञानी, तुम आत्म तत्त्व के विज्ञानी।।
जय पार्श्वनाथ तुम साथ रहो, जब तक हैं प्राण मम चित्त बसो।
जय पार्श्वनाथ तुम जग बंधु, भक्ति से तरते भव सिंधु।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता

कलिकुण्डं नामी, पारस स्वामी, जगत्पिता त्रैलोक्यपति।
वसुनन्दी ध्यावे, शीश झुकावे, मोक्ष दिला दो परम यति।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥

अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥

त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥

कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा - भाववन्दना - त्रिकालपूजा - त्रिकालवन्दना - कृत- कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधु- पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग - करणानुयोग - चरणानुयोग - द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि - दशलक्षण - धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

जल – थल – आकाश – गुहा – पर्वत – नगरवर्ति – ऊर्ध्व – मध्य – अधोलोकेषु विराजमान – कृत्रिम – अकृत्रिम – जिन – चैत्यालय – जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान – विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च – भरत – पञ्च – ऐरावत – दशक्षेत्र – सम्बन्धि – त्रिंशत् – चतुर्विंशतिगत – विंशत – उत्तर – सप्तशत – जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप – सम्बन्धि – द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि – अशीति – जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर – कैलाश – चम्पापुर – पावापुर – गिरनार – सोनागिरि – राजगृही – मथुरा – शत्रुञ्जय – तारङ्गा – कुण्डलपुर आदि – सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री – मूढ़बद्री – हस्तिनापुर – चन्देरी – पपौरा – अयोध्या – चमत्कारजी – महावीरजी – पद्मपुरी – तिजारा – आदि – अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि–महावीरपर्यन्त–चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे मेरु दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे.... तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका–श्रावक– श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।

पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।

शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

वसन्ततिलका

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।

स्रग्धारा

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

दोहा

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहुं भगवान॥२॥

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

श्री पार्श्वनाथ जिन चालीसा

दोहा

शीश नवा रस भक्ति से, कर प्रमाद नद पार।
पारस जिनवर का रचूँ, चालीसा सुखकार॥
पारसमणि सम पार्श्व जिन, वंदन करूँ त्रिकाल।
चिंताहर हर एक की, नशते सब दुख जाल॥

चौपाई

चिंतामणि पारस को वंदन, प्राणीमात्र का हरें क्रंदन।
बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, उग्रवंश के आप शशीधर॥1॥
तेइसवें तीर्थंकर नामी, बसे हृदय पर पारस स्वामी।
कहलाते उपसर्ग विजेता, हुए आप शिवपुर के नेता॥2॥
दस भव अति संघर्ष है बिताया, क्षमा भाव निज चित्त उपाया।
थे मरुभूति आप जब स्वामी, भ्रात कमठ ने हठ थी ठानी॥3॥
भ्रमण करत नवमा भव धारा, दामर सुत आनंद कुमारा।
मुनि बन वन में ध्यान लगाया, सोलहकारण भाव बनाया॥4॥

कमठ बना पंचानन वन में, मुनि लख बैर विचारा मन में।
मुनि भक्षण कीना वह क्रूरा, समता शस्त्र धारि मुनि शूरा॥5॥
तन तज तेरम स्वर्ग विमाना, पाय ऋद्धि युत भोग महाना।
अवतारे फिर नगर बनारस, कहलाए चिंतामणि पारस॥6॥
बदी विशाख दौज सुखदाई, गर्भ विषैं आए जिनराई।
शुभ सोलह सपनों के द्वारा , माता हर्षित हुई अपारा॥7॥
सुर वर्षा नित करें रतन की, पूर्ण हुई आशा हर मन की।
पन्द्रह माह रतन की धारा, सजे नगर व महल चौबारा॥8॥
सुख से बीते यों नवमासा, अवतारे जिनवर सुखराशा।
अश्वसेन नृप वामा माता, जिनके सुत पारस विख्याता॥9॥
पौष वदी एकादश नामी, जन्मलिया श्री पारस स्वामी।
परिकर औ परिवार समेता, कीना उत्सव इन्द्र नरेशा॥10॥
क्षीराम्बुधि जलघट सुर लाए, मेरूगिरि पर न्हवन कराये।
सुरपति सहस नयन कर निरखे, ताण्डव नृत्य कियो मन भर के॥11॥
अवतारे जग पालनहारे, त्रिभुवन माहिं सुख विस्तारे।
नाना वाद्य वजे नभ तल में, खुशियां बरसे हर पलपल में॥12॥
हरितवर्ण तन द्युति मनहारी, सौम्य शांतिमय छवि तुम्हारी।
लक्षण उरग पदाग्र सुशोभित, पार्श्व करें हर मन को मोहित॥13॥
है उतुंग नव हस्त सु काया, दस अतिशय युत तेज समाया।
बल सुबुद्धि साहस सर्वोत्तम, अनुपम कौशल पार्श्व जिनोत्तम॥14॥
एक दिन सब मित्रों को लेकर, वन विचरन विचार संजोकर।
कमठ जीव देखा अज्ञानी, महीपाल तापस अभिमानी॥15॥

करुणा युत प्रभु वचन सुनाये, तपसी तू क्यों पाप कमाये।
लक्कड़ में क्यों जीव जलाते, क्या इसको तुम धर्म बताते।।16।।
हिंसा तज सत्पथ अपनाओ, अपना हित यदि करना चाहो।
क्रोध अनल की ज्वाला, लक्कड़ चीरा लेके कुदाला।।17।।
निकला नाग नागिनी जोड़ा, जिनका जीवन रहा था थोड़ा।
करुण भाव प्रभु के मन आया, महामंत्र णमोकार सुनाया।।18।।
मरकर दोउ बने देवेश्वर, पद्मावति धरणेन्द्र अहीश्वर।
महीपाल तपसी तव नाना, कुतप करि लहि ज्योति विमाना।।19।।
अष्टम वर्ष भए सुकुमारा, अणुव्रत निधि पाई सुखकारा।
वर्ष सोलह में करि सुचिंतन, अस्वीकारा परिणय बंधन।।20।।
पूरव भव का आया चिंतन, कीना तुम आतम का मंथन।
भव तन भोगन हुई निराशा, वन अश्वत्थ सु कीना वासा।।21।।
पौष वदी एकादश प्यारी, शतक मुनि संग दीक्षा धारी।
सिद्धों का प्रभु ध्यान लगाया, मनपर्यय शुभ ज्ञान उपाया।।22।।
बालपने में मदन प्रहारी, तीस वर्ष में दीक्षा धारी।
छोड़े राज भोग आडम्बर, भाया तुमको भेष दिगम्बर।।23।।
करि बिहार जब प्रथम हि बारा, धान्यसेन घर कियो अहारा।
पंचाश्चर्य भए सुर द्वारा, देव करें नभ से जयकारा।।24।।
एक दिवस प्रभु ध्यान लगाये, कमठ जीव जो देव कहाए।
नाम काल संवर हि बखाना, चढ़ि आया झट पुष्प विमाना।।25।।
पारस ऊपर जब वह आया, पूर्व बैर धर सुर बौराया।
लाल लाल लोचन कर लीना, अति विकराल रूप निज कीना।।26।।

ओले सोले पत्थर पानी, बरसाये कपटी अज्ञानी।
सात दिवस तक की मनमानी, रहे मेरु सम पारस स्वामी।।27।।
पद्मावति आसन कंपाया, प्रभु उपकार याद तब आया।
आए झटित उपसर्ग हरने, पर निश्चय भव वारिधि तरने।।28।।
पद्मावति ने फण फैलाया, पारस प्रभु को शीश बिठाया।
प्रभु धरणेन्द्र भी आए, फण मण्डप रच छत्र बनाये।।29।।
नागों बीच पार्श्व प्रभु ऐसे, मेघ घिरे पर्वत हों जैसे।
हार गया बैरी अभिमानी, खत्म हुई फिर बैर कहानी।।30।।
चार माह दुर्द्धर तप धारे, संघर्षों से तुम ना हारे।
कपटों में साहस ना खोता, सोना आखिर सोना होता।।31।।
शुक्ल ध्यान की अनल जलाकर, चार घातिया कर्म नशाकर।
चैत चतुर्थी कृष्ण सुखाकर, पाया केवलज्ञान दिवाकर।।32।।
कपट कमठ उपकार सु कीना, जिसने पद अर्हत् है दीना।
उपसर्गों में खेल रचाया, नंत चतुष्टय गुण प्रकटाया।।33।।
समवशरण रचना अति प्यारी, सर्व जगत से है जो न्यारी।
शत इन्द्रों पूजित प्रभु साजे, सहस पंच धनु गगन विराजे।।34।।
मातंग यक्ष प्रभु गुण गावे, पद्मा यक्षी गीत सुनावे।
श्रोता महासेन नृप नामी, गणिनि सुलोका कही प्रधानी।।35।।
खिरि गंभीर न्याय युत वाणी, सर्व जनों को है कल्याणी।
सेवा में दस गणधर ज्ञानी, सिरी स्वयंभू गणी प्रधानी।।36।।
चौंतिस अतिशय युक्त जिनेशा, वीतराग सर्वज्ञ हितैषा।।
कर विहार दश दिश भगवाना, पहुँचे गिरि सम्मेद महाना।।37।।

सुवरणभद्र सु कूट पे आके, वसुविधि बंधन भस्म बनाके।
श्रावण वदि सप्तम जब आया, मुक्ति मुकुट जिन शीश लगाया।।38।।
इक सौ वर्ष की आयु पाकर, चिर विश्राम किया शिव जाकर।
हुए अखण्ड अचल अविनाशी, सिद्ध स्वरूपी सुख की राशी।।39।।
नखत विशाखा है अघ हारक, हुये नाथ जु पंचकल्याणक।
पारस पग से जो लग जाता, वो लोहा सोना बन जाता।।40।।
क्षमा आपकी परम विशाला, दशभव का बैरी भी हारा।
कपट त्याग नत होकर आया, पारर्व प्रभु जयकार लगाया।।41।।
अपकारी का भी उपकारा, कीना नाथ क्षमा के द्वारा।
हार मान निज शीश झुकाया, सम्यग्दर्शन उसने पाया।।42।।
भगवन् मुझको शक्ति देना, साहस देना भक्ति देना।
बैर भाव ना रखूँ किसी से, क्षमा भाव चित धरूँ सभी से।।43।।

दोहा

पार्श्वनाथ पद कुंज में, नमूँ झुका निज माथ।
मम उर के जब नाथ तुम, फिर क्यों रहूँ अनाथ।।
पारस पग के पास में, चालीसा चित धार।
भक्ति सुरस पीकर करूँ, शीघ्र भवोदधि पार।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

वामा देवी लाल की अश्वसेन गोपाल की
चलो उतारें आज आरती पार्श्वनाथ भगवान् की....।टेक।।
पौष कृष्ण एकादशी आई, तिहुँ जग मोद मनाये जी,
काशी नगरी जन्म लिया है, सुर नर मंगल गायें जी।
अमित अतुल बलवान् की, केवल ज्योति महान् की,
चलो उतारें आज आरती.....
सोलह सपने देकर माँ को, प्राणत स्वर्ग से तुम आये,
दोज कृष्ण वैशाख माह में, इन्द्र रत्न हैं बरसाये।
नंत गुणों के खान की, मम् प्राणों के प्राण की,
चलो उतारें आज आरती.....
बाल ब्रह्मचारी हे भगवन्! जन्म दिवस दीक्षा धारी,
राजपाट माया को तजकर, हुये दिगम्बर अविकारी।
जयी उपसर्ग महान् की, तीन लोक परधान की,
चलो उतारें आज आरती.....
नंत चतुष्टय धारी प्रभुवर, नंतदर्शी जिन हितकारी,
चैत कृष्ण की चतुर्थी आई, समवशरण रचना भारी।
पद्म शुक्ल सुध्यान की, कलिकुण्ड के राम की,
चलो उतारें आज आरती.....
योग निरोध कर्म वसु नशकर, मुक्ति वधु को परिणाया,
सावन शुक्ला सप्तमी के दिन, सुवर्णभद्र से शिव पाया।
जिन शासन के शान की, शाश्वत सुध निर्वाण की,
चलो उतारें आज आरती.....
कलिकुण्ड चिंतामणि अरु, पारसमणि तुम हो कहलाते,
नाम जपत तव कालसर्प अरु, ग्रह घोर सब टल जाते।
परम पुनीत पुमान की, परम पूज्य गुणवान् की,
चलो उतारें आज आरती.....

निर्वाणकांड (भाषा)

–कवि श्री भैया भगवतीदास जी

दोहा

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहौं कांड-निर्वाण की, भाषा-सुगम बनाय॥1॥

चौपाई छंद

'अष्टापद' आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौ भाव-भगति उर-धार॥2॥
चरम-तीर्थंकर चरम-शरीर, 'पावापुरि' स्वामी-महावीर।
'शिखर-सम्मेद' जिनेश्वर बीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥3॥
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नग सु तारवर' मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव-सहित कर-जोड़ि॥4॥
श्री 'गिरनार'-शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥5॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति-मँझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार॥6॥
पांडव-तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥7॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।

श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥8॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥9॥
नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥10॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम-हुलास॥11॥
रेवानदी 'सिद्धवर-कूट', पश्चिम-दिशा देह जहँ छूट।
द्वय-चक्री दश-कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव-पार॥12॥
'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण-दिशि 'गिरि-चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर-तर्ण॥13॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर-मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥14॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम-दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥15॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति-मँझार, ते वंदौं नित सुरत-संभार॥16॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढ़गिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित-लाय॥17॥
वंसस्थल-वन के ढिंग होय, पच्छिम-दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।

कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।18।।
जसरथ-राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि-प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान।।19।।
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।20।।
'मथुरापुरी' पवित्र-उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम-केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल।।21।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित-प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।।22।।
संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल।।23।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन

(वंशस्थ छन्दः)

तमाल-नीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः

प्रकीर्ण-भीमा शनि-वायु-वृष्टिभिः

बलाहकैर्वैरि-वशैरुपद्रुतो,

महामना यो न चचाल योगतः॥1॥

अन्वयार्थः (**तमालनीलैः**) तमाल वृक्ष के समान नील- वर्ण, (**सधनुस्तडिदगुणैः**) इन्द्रधनुषों की बिजली रूप डोरियों से सहित, (**प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः**) भयंकर, वज्र, आँधी और वर्षा को बिखेरने वाले ऐसे, (**वैरिवशैः**) शत्रु के वशीभूत, (**बलाहकैः**) मेघों के द्वारा, (**उपद्रुतः**) पीड़ित होने पर भी, (**महामनाः**) उत्कृष्ट-धैर्य के धारक, (**यः**) जो पार्श्वनाथ भगवान् (**योगतः**) शुक्लध्यान रूप योग से, (**न चचाल**) विचलित नहीं हुए थे।

भावार्थ—तमाल वृक्ष के समान नील-वर्ण, इन्द्रधनुषों की बिजली रूप डोरियों से सहित, भयंकर, वज्र, आँधी और वर्षा को बिखेरने वाले ऐसे शत्रु के वशीभूत मेघों के द्वारा उपद्रव होने पर भी उत्कृष्ट-धैर्य के धारक जो पार्श्वनाथ भगवान् शुक्लध्यान रूप योग से विचलित नहीं हुए थे।

वृहत्फणा-मण्डल-मण्डपेन यः,

स्फुरत्तडित्पिंग-रुचोपसर्गिणम्।

जुगूह नागो धरणो धराधरं,

विराग-संध्या-तडिदम्बुदो यथा॥2॥

अन्वयार्थः (**उपसर्गिणं**) उपसर्ग से युक्त (**यः**) जिन पार्श्वनाथ भगवान् को (**धरणोनागः**) धरणेन्द्र नामक नागकुमार देव

ने (**सफुरत्तडित्पिंगरुचा**) चमकती हुई बिजली के समान पीली कान्ति से युक्त (**वृहत्फणामण्डलमण्डपेन**) बहुत भारी फणा-मण्डलीरूपी मण्डल के द्वारा (**तथा**) उस तरह (**जुगूह**) वेष्टित कर लिया था (**यथा**) जिस तरह कि (**विरागसंध्यातडिदम्बुदः**) काली संध्या के समय बिजली से युक्त मेघ (**धराधरं**) पर्वत को वेष्टित कर लेता है।

भावार्थ–उपसर्ग से युक्त जिन पार्श्वनाथ भगवान् को धरणेन्द्र नामक नागकुमार देव ने चमकती हुई बिजली के समान पीली कान्ति से युक्त बहुत भारी फणामण्डल रूपी मण्डल के द्वारा उस तरह वेष्टित कर लिया था जिस तरह कि काली संध्या के समय बिजली से युक्त मेघ पर्वत को वेष्टित कर लेता है।

स्व-योग-निस्त्रिंश-निशात-धारया,

निशात्य यो दुर्जय-मोह-विद्विषम्।

अवापदार्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं,

त्रिलोक-पूजातिशयास्पदं पदम्॥3॥

अन्वयार्थः (**यः**) जिन्होंने (**स्वयोगनिस्त्रिंशनिशातधारया**) अपने शुक्लध्यान रूप खड्ग की तीक्ष्ण धारा के द्वारा (**दुर्जयमोहविद्विषम्**) मोहरूपी दुर्जय शत्रु को (**निशात्य**) नष्ट कर (**अचिन्त्यं**) अचिन्तनीय (**अद्भुतं**) आश्चर्यकारक गुणों से युक्त, (**त्रिलोकपूजातिशयास्पदं**) त्रिलोक की पूजा के अतिशय के स्थान (**आर्हन्त्यं पदम्**) अर्हत् पद को (**अवापत्**) प्राप्त किया था।

भावार्थ–जिन्होंने अपने शुक्लध्यानरूपखड्ग की तीक्ष्ण धारा के द्वारा मोहरूपी दुर्जयशत्रु को नष्ट कर अचिन्तनीय आश्चर्यकारक

गुणों से युक्त त्रिलोक की पूजा के अतिशय के स्थान आर्हन्त्य पद को प्राप्त किया था।

यमीश्वरं वीक्ष्य विधूत-कल्मषं,

तपोधनास्ते पि तथा बुभूषवः।

वनौकसः स्व-श्रम-वन्ध्य-बुद्धयः,

शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे।।4।।

अन्वयार्थः (**यं**) जिन पार्श्वनाथ भगवान् को (**ईश्वरं**) समस्त लोक के ईश्वर तथा (**विधूतकल्मषं**) घातिचतुष्क रूप पाप से रहित (**वीक्ष्य**) देखकर तथा (**बुभूषवः**) उन्हीं के समान होने के इच्छुक (**वनौकसः**) वनवासी (**ते तपोधनाः अपि**) वे तपस्वी भी (**स्वश्रमबन्ध्यबुद्धयः**) अपने प्रयास में निष्फल बुद्धि होते हुए (**शमोपदेशं**) मोक्षमार्ग अथवा शांति का उपदेश देने वाले भगवान् पार्श्वनाथ की (**शरणं प्रपेदिरे**) शरण को प्राप्त हुए थे।

भावार्थ–जिन पार्श्वनाथ भगवान् को समस्त लोक के ईश्वर तथा घातिचतुष्क रूप पाप से रहित देखकर तथा उन्हीं के समान होने के इच्छुक वनवासी वे तपस्वी भी अपने प्रयास में निष्फल बुद्धि होते हुए मोक्षमार्ग अथवा शांति का उपदेश देने वाले भगवान् पार्श्वनाथ की शरण को प्राप्त हुए थे।

स सत्य-विद्या-तपसां प्रणायकः,

समगधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान्।

मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते,

विलीन-मिथ्यापथ-दृष्टि-विभ्रमः।।5।।

अन्वयार्थः (**सत्यविद्यातपसां**) जो सत्य विद्याओं तथा तपस्याओं के (**प्रणायक**) प्रणेता थे, (**समग्रधीः**) जो पूर्ण

केवलज्ञान के धारक थे **(उग्रकुलाम्बरांशुमान्)** जो उग्र वंशरूपी कुल के चन्द्रमा थे और **(विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः)** जिन्होंने मिथ्यामार्ग सम्बन्धी कुदृष्टियों से उत्पन्न विभ्रमों को नष्ट कर दिया था **(सः)** वे **(पार्श्वजिनः)** पार्श्वनाथ जिनेन्द्र **(मया)** मुझ समन्तभद्र के द्वारा **(सदा)** हमेशा **(प्रणम्यते)** प्रणत किए जाते हैं। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ–जो सत्य विद्याओं तथा तपस्याओं के प्रणेता थे, जो पूर्ण केवलज्ञान के धारक थे जो उग्र वंशरूपी कुल के चन्द्रमा थे और जिन्होंने मिथ्यामार्ग सम्बन्धी कुदृष्टियों से उत्पन्न विभ्रमों को नष्ट कर दिया था वे पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मुझ समन्तभद्र के द्वारा हमेशा प्रणत किए जाते हैं। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ।

श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ भगवान परिचय

वंश	–	उग्र
माता का नाम	–	ब्राह्मी/वर्मिला/वामा
पिता का नाम	–	श्री अश्वसेन
जन्मस्थली	–	वाराणसी
चिन्ह	–	सर्प
वर्ण	–	तप्त स्वर्ण सम पीत
आयु	–	100 वर्ष
अवगाहना	–	9 हाथ
गर्भ कल्याण तिथि	–	वैशाख कृ० 6
गर्भ कल्याण नक्षत्र	–	विशाखा
जन्म कल्याण तिथि	–	पौष कृ० 11
जन्म कल्याण नक्षत्र	–	पुनर्वसु
तप कल्याण तिथि	–	माघ शु. 12
तप कल्याण नक्षत्र	–	विशाखा
केवलज्ञान कल्याण तिथि	–	चैत्र कृ० 4
केवलज्ञान कल्याण नक्षत्र	–	विशाखा
मोक्ष कल्याण तिथि	–	श्रावण शु० 7
मोक्ष कल्याण नक्षत्र	–	विशाखा
मोक्ष स्थली	–	सम्मेद शिखर जी
मोक्ष कूट	–	स्वर्ण भद्र कूट

वैराग्य का कारण	–	जाति स्मरण
दीक्षा वन	–	अश्वत्थ
दीक्षा वृक्ष	–	धव/देवदारू
सहदीक्षित	–	300
छदमस्थ काल	–	4 मास
सर्व ऋषि	–	16 हजार
यक्ष	–	यक्षेश्वर
यक्षिणी	–	वज्रश्रृंखल
सर्व आर्यिका	–	38 हजार/36 हजार
कुल गणधर	–	11
मुख्य गणधर	–	स्वयंभू
मुख्य श्रोता	–	महासेन
मुख्य आर्यिका	–	सुलोका/सलोचना
प्रथम आहारदाता	–	धान्यसेन
कुल श्रावक	–	1 लाख
कुल श्राविका	–	3 लाख
केवलीकाल	–	69 पूर्व 8 मास
तीर्थंकाल	–	278 वर्ष
देवगति से पूर्वभव का नाम	–	आनन्द
देवगति से पूर्वभव में पिता का नाम	–	श्री दामर (समुद्रत्त)
इनके तीर्थकाल के कामदेव	–	जीवन्धर
कामदेव का मोक्ष	–	सिद्धवरकूट

परम्पराचार्य अर्घावली

वीतराग जिनगिरि से निसृत द्वादशांग जिनवर वाणी,
गणधर सूरी ज्ञान कुण्ड से झरती पीते भवि प्राणी।
मुनिराजों ने जिन्हें स्वयं ही शब्दों में लिपिबद्ध किया,
प्रथम चरण अरु करण द्रव्य को अर्घ चढ़ा हम नमन किया॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग मय सरस्वती देव्यैः नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन आचार्यों के चरणों में, झुका रहे अपना माथा।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, हो जाता निज से नाता॥
षट्खण्डागम आदि सिद्धांतों, को जिनने लिपिबद्ध किया।
पुष्पदंत, धरसेन, भूतबली आचार्यों से ज्ञान लिया॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री-धरसेन-पुष्पदंत-भूतबलि परमेष्ठिभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मरसिक सिद्धान्त मनीषी आगम के मर्मज्ञ महान,
परम तपस्वी अविचल ध्यानी निजानंद करते रसपान।
निज आतम कल्याणहेतु हम करते पूजन अरु गुणगान,
कुंद कुंद आचार्य श्री को नमन करूँ जो हैं भगवान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्मरसिक आचार्य भगवान् श्री कुंदकुंद स्वामिने अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम तपस्वी शांति सिंधु मुनि पंचम युग में तीर्थ समान,
तीर्थंकर वत् कलिकाल में जिनशासन का कर यशगान।
चक्रवती चारित्र शिरोमणि भव्यों को सत्यार्थ प्रमाण,
तीन भक्ति युत अर्घ चढ़ाऊँ पाने को समकित वरदान॥

ॐ ह्रूँ प.पू. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवन् श्री शांतिसागरजी मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग विरागी हे गुरु ज्ञान ध्यान तप लीन महान,
विषय वासना अरु कषाय से रिक्त चित्त जिनका अमलान।
पायसिन्धु को पाकर हम सब शिवमग पावें विषय नशाय,
ऐसे उत्तम मुनिपद पंकज अर्घ चढ़ाकर शीश नवाय॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य परम तपस्वी आचार्य भगवन् श्री पायसागर मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष विजेता मन के जेता सूरीवर जयकीर्ति प्रधान,
निर्विकल्प शुभ ध्यान पायकर पाया निज आतम का ज्ञान।
भाव सहित गुरु भक्ति पूजा करती पाप कर्म की हान,
जल फलादि वसु अर्घ चढ़ाकर पाएं हम भी उत्तम ज्ञान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् श्री जयकीर्ति मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजों में आप प्रमुख हैं सूरीवर जो कहलाते,
भारत गौरव जिनवृष सौरभ मार्ग धर्म का बतलाते॥
रत्नत्रय से आप विभूषित गुरू देश भूषण स्वामी,
भक्तियुत शुभ अर्घ चढ़ाकर बन जाऊँ मैं निष्कामी॥

ॐ ह्रूं परमपूज्य भारतगौरव आचार्य भगवन् श्री देशभूषण मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर कंचन थाल भराये हैं,
निज आतम के वसु गुण पाने तव पद आज चढ़ाये हैं।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणीमात्र हितकारी हो,
सिद्ध-शास्त्र-आचार्य भक्ति युत नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की पूजन

स्थापना

ऋषिमण्डल के ऋषिवर तेरा करते हम आह्वानन्,
तिष्ठ तिष्ठ मय हृदय विराजो सन्निकट होय तेरे भगवन्।
भाव पुष्प लेकर आये हैं, करने तेरा समदरशन,
यही साथ है मन में बस इक पायें तरी चरण शरण॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल

भव के कीचड़ में फंसकर के समय बहुत ही व्यर्थ किया,
पंकज सा खिलने आया था, भूल गया और स्वार्थ किया।
निर्मल जल से तुम अति पावन मेरा अब उद्धार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

लिपटे हों कितने भुजंग पर, चंदन तो शीतल ही रहता,
परिषहों को सहकर गुरुवर तेरा निश्चल मन रहता।
शीतल चंदन सी छाया सम मेरा अब उद्धार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

क्षत विक्षत हो पड़ा रहा मैं तन की विकट लालसा में,
आत्म ज्ञान कैसे हो पाता इस विपरीत विकलता में।
अक्षय पद का मार्ग बताकर मेरा अब उद्धार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

क्रोध लोभ माया के मद में फूला रहा रात और दिन,
अहंकार से वशीभूत हो जीता रहा सांस गिन-गिन।
पुष्प संजोकर लाया हूँ अब हे गुरुवर स्वीकार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जिह्वा के रस में फंसकर ही व्यसन अनेक किये मैंने,
खाद्य अखाद्य बिना जाने ही सब स्वीकार किये मैंने।
अब नैवेद्य थाल भर लाया अब इनको स्वीकार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

गहन तमस में खोज रहा था भीतर भरी दिव्यता को,
आँखें मूंदे भटक रहा था, पाने उसी भव्यता को।
दीपक की इस लौ के भीतर अपना दिव्य प्रकाश भरो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय मोहान्धकाराय-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

कर्मों के बंधन ने जकड़ा भव की पावक झुलसाती,
लाख जतन कर हार गया पर तिपश ना कम होने पाती।
धूप दहन करने आया हूँ अब मेरा उद्धार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

निष्फल प्राणों में उलझा था असफल होकर जब हार गया।
गुरु ज्ञान मिला सन्मार्ग मिला नव जीवन को स्वीकार किया।
फल यही चाहिए सम्बल बन मेरी नैया को पार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय महामोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

अष्ट कर्म भेदन करने को, अष्ट द्रव्य का थाल लिया,
कृपा पात्र हूँ मेरे गुरुवर तुमने मुझे संभाल लिया।

स्तुत्य बना आनन्दित हूँ अब मेरा उद्धार करो,
मुझको अपना आश्रय देकर मेरा बेड़ा पार करो॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिंद्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शरणागत हूँ शरण दो कर जोड़े निज हाथ।
जन्म मरण छुट जाये सब सदा रहो अब साथ॥

जयमाला

गुरु आपने शिष्य मुझको बनाया,
जगा भाग्य मेरी शरण तेरी आया।
सदा अपनी छाया का आभास देना,
बहुत बन चुका हूँ जगत का खिलौना।
जन्मा मरा मैं कई बार जग में,
काँटे बहुत बोये अपने ही मग में।
मिला ज्ञान तुमसे जगी एक आशा,
मिटी मेरे भीतर की सारी निराशा।
सहज हो गया तेरे चरणों में आकर,
सरलता मिली तेरी किरणों को पाकर।
कर्दम जगत की ना पकड़ेगी मुझको,
मकड़ जाल में अब ना जकड़ेगी मुझको।
मैं हमँ शुद्ध चेतन अजर हूँ अमर हूँ,
निराकुल निराभाव आनंद का धर हूँ।
प्रफुल्लित हृदय कर रहा तेरा वंदन।
हर एक सांस जीवन की तुझको है अर्पण॥

दोहा

धन्य हुआ तन, मन स्त्री भीतर है उल्लास।
भक्ति मुक्ति दोनों मिलें जगा अटल विश्वास॥

क्षपक शिरोमणी आचार्य श्री विद्यानंद जी की आरती

गुरुवर, गुरुवर विद्यानंद न्यारे, जिनशासन के ध्रुव तारे।
जगमग उतारुँ थारी आरती,
हो गुरुवर हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
मात सरस्वती के सुत प्यारे, कल्पप्पा पितु थारे
शेडवाल की माटी पावन, जहाँ सुरेन्द्र अवतारे।
गुरुवर दक्षिण के सूर्य निराले, दश दिश कीने उजियारे।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।1।।

भेष दिगम्बर धार के गुरुवर, चले मुक्ति को वरने,
गुरु देशभूषण नौका पर, लगे भवोदधि तरने।
गुरुवर संयम का लेके सहारा, मोहादि को संहारा।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।2।।

राष्ट्रसंत सिद्धांत, चक्रवर्ती गुरुवर महाज्ञानी
बाल ब्रह्मचारी इस युग में तव गौरव गाथा न्यारी।
गुरुवर गिरतों को तुमने संभाला, जप कर तब नाम की माला।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।3।।

लखके उत्तम समाधि तुमरी, हुआ जगत आकर्षण
वसुनंदी के रूप में अब हम, पायेंगे तब दर्शन।।
गुरुवर जिनवृष के हो तुम शूरी, क्षपक शिरोमणी सूरी।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।4।।

श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ विधान

मांडना

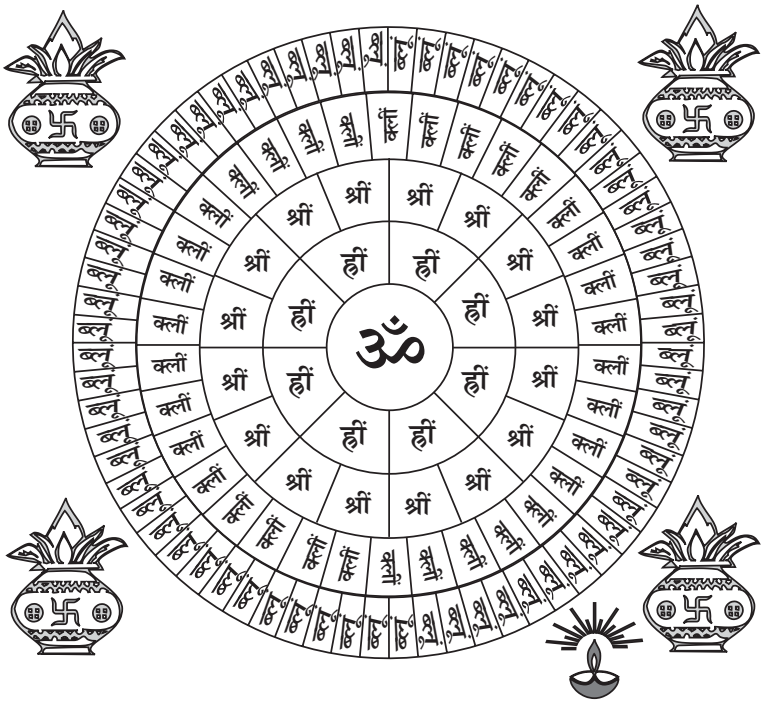

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
6. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

Inspirational Tales Part- 1 & 2

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दु:खदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-15
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दुःखों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचा
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति ज
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य ज
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी ज
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसा
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबाल
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - अर्हंत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव ज
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्व
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वाम

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
2. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
3. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
4. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
5. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
7. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
8. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
9. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
11. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
12. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
13. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')